खजुराहो नृत्य महोत्सव के 50 वर्ष पूरे

चर्चा में क्यों?

हाल ही में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने **खजुराहो नृत्य महोत्सव** की स्वर्ण जयंती (50वें संस्करण) कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर **1484 कलाकारों** ने सबसे अधिक संख्या में कलाकारों के साथ **सबसे बड़े** कथक नृत्य प्रदर्शन का नया विश्व रिकॉर्ड बनाया।

मुख्य बिंदु:

- प्रसिद्ध विश्व धरोहर स्थल पर **'कथक कुंभ'** का रिकॉर्ड स्थापित करने वाला (विश्व रिकॉर्ड) प्रदर्शन उज्जैन तथा ग्वालियर आयोजनों के बाद लगातार तीसरा प्रदर्शन है, जिसे **गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड** द्वारा भी दर्ज और मान्यता दी गई है।
    - उज्जैन में 11 लाख 71 हज़ार 78 दीये जलाये गए।
    - जबकि ग्वालियर के तानसेन समारोह में **ग्वालियर किले** में ताल दरबार के दौरान कुल 1600 की संख्या में तबला कलाकारों ने एक साथ ताल बजाई।
- सीएम ने **खजुराहो में आदिवासी और लोक कलाओं के प्रशिक्षण के लिये देश का पहला गुरुकुल** स्थापित करने की घोषणा की।
- खजुराहो नृत्य महोत्सव (KDF) का आयोजन प्रमुख सचिव शिव शेखर शुक्ला के मार्गदर्शन में **सांस्कृतिक एवं पर्यटन विभाग** द्वारा किया जा रहा है।
- KDF ने इस कार्यक्रम को **भगवान नटराज महादेव** को समर्पित करने का फैसला किया है, जिन्हें अक्सर 'नृत्य के देवता' के रूप में जाना जाता है। यह विशेष **शिव अवतार दर्शाता है कि कैसे नृत्य भगवान के साथ सीधे संपर्क का एक पवित्र माध्यम है।**
- प्रसिद्ध नृत्य गुरु राजेंद्र गंगानी की कोरियोग्राफी में प्रदेश के विभिन्न शहरों से आए कलाकारों ने **राग बसंत** में मनमोहक प्रस्तुति दी।
- गुरुकुल में वरिष्ठ विशेषज्ञों और 'गुरुओं' की सहायता से **विशेष शिल्प, नेतृत्व, गायन, संगीत, चित्रकला, क्षेत्रीय साहित्य** सिखाने के पाठ्यक्रमों के साथ आदिवासी तथा ग्रामीण समुदायों की पारंपरिक कलाओं में प्रशिक्षण के इच्छुक उम्मीदवारों के लिये सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएंगी।

खजुराहो नृत्य महोत्सव

- खजुराहो नृत्य महोत्सव की **शुरुआत वर्ष 1975** में की गई थी और तब से आज तक मध्य प्रदेश शासन के **संस्कृति विभाग के अंतर्गत उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी** द्वारा इसका सफल आयोजन निरंतर किया जाता रहा है। तब से लेकर आज तक यह नृत्य समारोह खजुराहो के सुप्रसिद्ध मंदिरों के प्रांगण में आयोजित होता आ रहा है।
- खजुराहो नृत्य महोत्सव में अब तक भारत की सभी प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैलियों जैसे **भरतनाट्यम, ओडीसी, कथक, मोहिनीअटम, कुचिपुड़ी, कथकली, यक्षगान, मणिपुरी** आदि के युवा और वरिष्ठ कलाकार अपनी कला की आभा बिखेर चुके हैं।
- महोत्सव के माध्यम से नृत्य में शास्त्रीयता की गरिमा बनाए रखने के साथ नवाचार करने का प्रयास किया जाता रहा है।

कथक (उत्तर भारत)

- इसका नाम 'कथिका' से लिया गया है
- उत्पत्तिः ब्रजभूमि की रासलीला
  - संगीत, नृत्य तथा कथा का संयुक्त रूप
  - मंदिर या गाँव की प्रस्तुति।
- कथक में राधा-कृष्ण की विषयवस्तु बहुत लोकप्रिय है।
- शास्त्रीय संगीतः उत्तर भारत (विशेष रूप से उत्तर प्रदेश)।
- कथक की शास्त्रीय शैली को 20वीं शताब्दी में लेडी लीला सोखे द्वारा पुनर्जीवित किया गया।
- हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय संगीत से संबद्ध शास्त्रीय नृत्य की एक मात्र शैली।

प्रस्तुतिः

- भाव-भंगिमाओं तथा संगीत के साथ महाकाव्यों से ली गई कविताओं की प्रस्तुति।
- पद-चालनों पर अधिक जोर। इसमें अभिव्यक्ति तथा लालित्य को अधिक महत्त्व दिया जाता है।
- प्रायः एकल प्रस्तुति।

कथक प्रस्तुति के घटक

- आनंदः परिचयात्मक प्रस्तुति।
- ठाटः हल्की किंतु अलग-अलग प्रकार की हरकतें।
- तोड़ा तथा टुकड़ाः तीव्र लय के लघु अंश।
- जुगलबंदीः तबलावादक तथा नर्तक के बीच प्रतिस्पर्द्धात्मक खेल।
- पढ़ंतः नर्तक जटिल बोल का पाठ कर नृत्य द्वारा उनका प्रदर्शन करता है।
- तरानाः समापन से पूर्व विशुद्ध लयात्मक संचालन।
- क्रमालयः समापनकारी अंश जिसमें जटिल तथा तीव्र पद-चालन का समावेश होता है।
- गत भावः बिना किसी गायन के किया गया नृत्य।

प्रसिद्ध प्रतिपादक

- बिरजू महाराज, लच्छू महाराज, सितारा देवी, दमयंती जोशी

वाद्ययंत्र

- तबला, पखावज, सारंगी, सितार

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/khajuraho-dance-festival-completes-50-years